Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 1

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 36

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

10 नवम्बर 2016 ई

9 सफर 1438 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

अगर मेरे मुकाबला में सारी दुनिया की क़ौमें जमा हो जाएं और इस बात का आमने सामने मुकाबला हो कि किस को ख़ुदा ग़ैब की ख़बरें देता है और किसकी दुआएं स्वीकार करता है और कैसे मदद करता है और किसके लिए बड़े बड़े निशान दिखाता है तो मैं ख़ुदा की कसम खाकर कहता हूँ कि मैं ही विजयी रहूँगा। क्या कोई है?! कि इस परीक्षा में मेरे मुकाबला में आए। हज़ारों निशान ख़ुदा ने केवल इसलिए मुझे दिए हैं कि ताकि दुश्मन मालूम करे कि इस्लाम सच्चा है। मैं अपना कोई सम्मान नहीं चाहता बल्कि उसका आदर चाहता हूँ जिसके लिए भेजा गया हूँ।

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

प्रश्न (9) जिन लोगों ने नेक निय्यत के साथ आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि के ख़िलाफ किया, या करते हैं अर्थात आं जनाब की रिसालत का इनकार करते हैं और अल्लाह तआला की तौहीद के मानने वाले हैं अच्छे काम करते हैं बुरे कामों से परहेज़ करते हैं उनके बारे में क्या आस्था रखी जाए।

उत्तर: इंसान की नेक निय्यती तसल्ली पाने पर साबित होती है अत: इस्लाम के अतिरिक्त किसी धर्म में शान्ति नहीं मिल सकती तो नेक निय्यती का सबूत क्या हुआ। जैसे ईसाई धर्म का यह हाल है कि वे खुले खुले तौर पर एक इंसान को ख़ुदा बना रहे हैं और आदमी भी वह कि जिस को विभिन्न प्रकार के कष्ट झेलने पड़े और आर्य समाज वाले अपने परमेश्वर के अस्तित्व पर कोई दलील नहीं लाए, क्योंकि उनके निकट वह सृष्टा नहीं तो सृष्टि पर नज़र कर के सृष्टा की पहचान हो और उनके धर्म की दृष्टि से ख़ुदा तआला चमत्कार नहीं दिखलाता और न वैदिक काल में दिखलाए तो चमत्कार के माध्यम से परमेश्वर का सबूत मिले और उनके पास इस बात पर कोई दलील नहीं कि वह गुण जो परमेश्वर की तरफ संबंधित किए जाते हैं सचमुच इसमें मौजूद हैं जैसे ग़ैब का ज्ञान और सुनना और बोलना और क़ुदरत रखना और दयालु होना। इसलिए उनका परमेश्वर केवल फर्ज़ी परमेश्वर है। यही ईसाइयों का हाल है। उनके ख़ुदा की इल्हाम पर भी मुहर लग गई है। इसलिए ऐसे परमेश्वर या ख़ुदा पर ईमान लाने से तसल्ली कैसे हो और जो आदमी अपने ख़ुदा पर को पूर्ण रूप से नहीं मानता वह कैसे पूर्ण रूप में ख़ुदा की मुहब्बत कर सके और कैसे शिर्क से खाली हो सके ख़ुदा ने अपने रसूल नबी की दलीलों के पूरा होने में कमी नहीं रखी वह एक सूर्य की तरह आया और हर एक पहलू से अपनी रोशनी दिखाई। इसलिए जो व्यक्ति इस वास्तविक सूर्य से मुंह फेरता है उसकी ख़ैर नहीं हम इसे नेक नीयत नहीं कह सकते। क्या जो व्यक्ति कुष्ठ रोगी है और कुष्ठ ने उसके अंगों को खा लिए हैं वह कह सकता है कि में कुष्ठ रोगी नहीं या मुझे इलाज की ज़रूरत नहीं और अगर कहे तो क्या हम इसे नेक इरादा कह सकते हैं। इसके सिवाय अगर मान लिया जाए पर कोई ऐसा व्यक्ति दुनिया में हो कि वह भी पूरी नेक निय्यती और ऐसा पूरी पूरी कोशिश की कि जैसे वह दुनिया का प्राप्त करने के लिए करता है इस्लाम की सच्चाई तक पहुँच नहीं सका तो इस का हिसाब ख़ुदा के पास है मगर हम ने अपनी सारी उम्र में ऐसा कोई आदमी देखा नहीं। इसलिए हम इस बात को बिल्कुल असंभव जानते हैं कि कोई व्यक्ति बुद्धि और न्याय की दृष्टि से किसी दूसरे धर्म को इस्लाम पर तरजीह(प्राथमिकता) दे सके। मूर्ख और अज्ञानी लोग स्वयं नफसे अम्मारह की शिक्षा से एक बात सीख लेते हैं कि केवल तौहीद काफी है। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुसरण की ज़रूरत नहीं। मगर याद रहे कि तौहीद की माँ नबी ही होता है जिस से तौहीद पैदा होती है और ख़ुदा के वजूद का उसी से पता लगता है और ख़ुदा तआला से अधिक दलील को पूरण रूप से कौन जानता है उसने अपने नबी की सच्चाई साबित करने के लिए ज़मीन और आसमान निशानों से भर दिया है और अब उस ज़माना में भी ख़ुदा ने इस तुच्छ सेवक को भेजकर असंख्य निशान आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पुष्टि करने के लिए प्रकट फरमाए हैं जो बारिश की तरह बरस रहे हैं तो दलील के पूर्ण होने में क्या कमी बाकी है। जिस व्यक्ति को विरोध करने की बुद्धि है वह क्यों समानता का रास्ता सोच नहीं सकता और जो रात को देखता है क्यों उस को दिन की रोशनी में नज़र नहीं आता। हालांकि तक़ज़ीब (विरोद्ध) की राहों की तुलना पुष्टि(मानने) की राह बहुत सुविधाजनक है हां जो अक्ल मारी गई आदमी की तरह है और मानव शक्तियों से कम हिस्सा रखता है उसका हिसाब ख़ुदा के सुपुर्द करना चाहिए इस विषय में बातें नहीं कर सकते। वह उन इंसानों की तरह है जो छोटी उमर और बचपन में मर जाते हैं, लेकिन एक दुष्ट मुकज़्ज़िब (विरोद्ध करने वाला) यह बहाना नहीं कर सकता कि मैं नेक निय्यत से तक़ज़ीब करता हूँ। देखना चाहिए कि उसके होश इस योग्य हैं या नहीं कि तौहीद और रिसालत के मस्ला को समझ सके। अगर मालूम होता है कि समझ सकता है मगर शरारत से तक़ज़ीब करता है तो वह क्योंकर बहाना करने वाला रह सकता है। यदि कोई सूर्य के प्रकाश को देखकर यह कहे कि दिन नहीं बल्कि रात है तो क्या हम उसे विकलांग समझ सकते हैं। इसी तरह जो लोग जान बूझकर टेढ़ी बहस करते हैं और इस्लाम के दलील को तोड़ नहीं सकते क्या हम विचार कर सकते हैं कि वे विकलांग हैं और इस्लाम तो एक जीवित धर्म है जो ज़िन्दा और मुर्दा में फर्क कर सकता है वह क्यों इस्लाम को छोड़ कर और मुर्दा धर्म को स्वीकार करता है। ख़ुदा तआला उस ज़माना में भी इस्लाम के समर्थन में बड़े बड़े चिन्ह दिखाता है और जैसा कि मैं इस बारे में ख़ुद अनुभव रखता है और मैं देखता हूँ कि अगर मेरे मुकाबला में सारी दुनिया की क़ौमें जमा हो जाएं और इस बात का आमने सामने मुकाबला हो कि किस को ख़ुदा ग़ैब की ख़बरें देता है और किसकी दुआएं स्वीकार करता है और कैसे मदद करता है और किसके लिए बड़े बड़े निशान दिखाता है तो मैं ख़ुदा की कसम खाकर कहता हूँ कि मैं ही विजयी रहूँगा। क्या कोई है?! कि इस परीक्षा में मेरे मुकाबला में आए। हज़ारों निशान ख़ुदा ने केवल इसलिए मुझे दिए हैं कि ताकि दुश्मन मालूम करे कि इस्लाम सच्चा है। मैं अपना कोई सम्मान नहीं चाहता बल्कि उसका आदर चाहता हूँ जिसके लिए भेजा गया हूँ। कुछ मूर्ख कहते हैं कि अमुक अमुक भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई और अपनी अज्ञानता से एक दो भविष्य वाणियों का उल्लेख करते हैं कि वे पूरी नहीं हुईं जैसा कि दुष्ट आदमी पहले नबियों के समय में ऐसा ही करते आए हैं। मगर वह सूर्य पर थोकना चाहते हैं और अपने

शेष पृष्ठ 7 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सम्पादकीय

जमाअत अहमदिया का परिचय

जमाअत अहमदिया वर्तमान युग में हज़रत इमाम महदी व मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा संस्थापित उस जमाअत का नाम है जो पूर्ण रूप से धार्मिक एवं इलाही तहरीक है। और जिसका राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं है। इस जमाअत को स्थापित करने का उद्देश्य यह है कि नाम के मुसलमानों को सच्चे मुसलमान बना कर उन में ठीक इस्लामी आत्मा पैदा की जाए और उन में इस्लामी प्रणाली को जारी किया जाए अर्थात उन के द्वारा धर्म को एक नई ज़िन्दगी मिले और शरीअत को स्थापित किया जाए। हाँ यह वही जमाअत है जिसके बारे में क़ुरआन शरीफ़ ने ''व आख़रीना मिन्हुम् लम्मा यल्हक़ू बिहिम'' (अल-जुम: : 4) अर्थात और इनके सिवा एक दूसरी जाति के लोगों में भी यह इस को भेजेगा जो अभी तक इन से नहीं मिली कह कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पुनरावरण में इस्लाम के पुर्नात्थान को स्थापित करने का बीड़ा उठाने वाली जमाअत और पवित्र क़ुरआन की आयत ''लियुज़्हिराहू अलद्दीने कुल्लेही'' (अस्सफ़ : 10) अर्थात समस्त धर्मों पर प्रभुत्व प्रदान करे, के अनुसार इस्लाम के प्रचार को मज़बूत, संगठित और व्यवस्थित बुनियादों पर स्थापित करके इस्लाम की विजय यात्रा को पूरा करने वाली जमाअत कहा है। और ख़ुदा के फ़ज़ल से इस जमाअत ने अपने जीवन के 106 वर्षीय युग में हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम और आपके पश्चात आपके पवित्र ख़लीफ़ाओं के पवित्र और कुशल नेतृत्व में विरोधियों और शत्रुओं के घोर विरोध, शत्रुता एवं रुकावट के होते हुए भी इस्लाम की विजय यात्रा को इस सीमा तक सफल बनाया है कि विश्व में चारों ओर न केवल अहमदियत को प्रसिद्धि प्राप्त है बल्कि सफल व सरगरम प्रचार केन्द्र व मस्जिदें, स्कूल व कालिज तथा हस्पताल स्थापित हैं, और क़ादियान की बस्ती से उठने वाली हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम की वह अकेली आवाज़ जिसे विरोधियों ने दबा देना चाहा था आज सारे संसार में एक करोड़ से अधिक अहमदी मुसलमानों के दिल की धड़कन बन कर धड़क रही है और आज हम बड़े गर्व से यह कह सकते हैं कि अहमदियत पर सूर्य अस्त नहीं होता और जमाअत अहमदिया के द्वारा इस्लाम की विजय की यह महान यात्रा इस रूप में जारी है कि हमारे इमाम सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस (तीसरे) रहेमहुल्लाहो तआला) के फरमान के अनुसार जमाअत अहमदिया के जीवन की दूसरी शताब्दी इन्शाल्लाह इस्लाम की विजय की शताब्दी होगी जिसका स्वागत करने की तैयारी में हम व्यस्त हैं। (दूसरी सदी का शानदार स्वागत हम कर चुके हैं - अनुवादक)

जमाअत अहमदिया का उद्देश्य

परन्तु जमाअत अहमदिया की यह उन्नति, इस्लाम की इस विजय यात्रा के महान कार्यक्रम और वास्तविक इस्लामी समाज की स्थापना, हमारे मुसलमान उलमा को एक आँख ना भाई और बजाय इसके कि वे इस धार्मिक जमाअत के साथ मिल कर इस्लाम के प्रचार के कर्त्तव्य को संगठित रूप से पूरा करते, अपनी अयोग्यता एवं स्वार्थ पर पर्दा डालने के लिए इस शुद्ध इस्लामी जमाअत को इस्लाम की सीमा रेखा से निकालने का फैसला करके काफिर घोषित कर दिया और मुस्लिम वर्ग में इस जमाअत के विरुद्ध यह मिथ्या विचार फैलाए कि इस जमाअत का इस्लाम से कोई सम्बन्ध नहीं है। यह इस्लाम के समान एक अन्य धर्म है और यह एक बुनियादी और नई मिल्लत है। जबकि यह बात हक़ीक़त और जमाअत के सिद्धांतों के सरासर विरुद्ध, ग़लत और आधारहीन इलज़ाम है। ऐसा करके उन विद्वानों ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इस फ़रमान और इस भविष्यवाणी को सत्य प्रमाणित कर दिया है कि :-

उलमाओहुम् शर्रुन् मिन् तहता अदीमिस्समाए' (मिश्कात)

अर्थात 'उन के औपचारिक और तथा-कथित मुस्लिम विद्वान आकाश के नीचे सबसे अधिक बुरे लोग होंगे। वह लड़ाई व फ़ितने का स्रोत होंगे।'

इसीलिए अल्लामा इक़बाल ने कहा है कि :-

दीने मोमिन फ़िकरो तदबीरे जिहाद
दीने मुल्ला फी सबीलिल्लाह फ़साद

अत: अहमदियत कोई नया धर्म या मज़हब या मिल्लत हरगिज़ नहीं है। बल्कि यह हक़ीक़ी इस्लाम ही का दूसरा नाम है। और हर अहमदी के दिल और नस-नस में इस्लाम और इस्लाम के संस्थापक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और क़ुर्आन करीम का प्रेम और इश्क़ रचा हुआ है। लीजिए हमारे दिल की आवाज़ जमाअत के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम के शब्दों में पढ़िए। आप अपनी किताब 'अय्यामुस्सुल्ह' के पृष्ठ 86-87 में फ़रमाते हैं :-

''याद रहे कि हमारे विरोधी, लोगों को जितनी घृणा दिला कर हमें काफ़िर और बेईमान ठहराते हैं और आम मुसलमानों को यह विश्वास दिलाना चाहते हैं कि यह आदमी तथा इसकी जमाअत इस्लाम के सिद्धान्तों और धर्म के नियमों से दूर है यह उन ईर्ष्यापूर्ण मौलिवयों के वे झूठ हैं कि जब तक किसी के दिल में एक कण के बराबर ईश्वर का डर हो, ऐसे झूठ नहीं बोल सकता, जिन पाँच बातों पर इस्लाम का आधार है, वे हमारे सिद्धान्त हैं। और जिस ख़ुदा के कलाम अर्थात क़ुरआन को पंजा मारने का हुक्म है हम उसको पंजा (अनुकरण) मार रहे हैं। और फ़ारूक़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की तरह हमारी ज़बान पर 'हस्बुना किताबुल्लाहि' और हज़रत आयशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा की तरह, जब हदीस और क़ुर्आन में मतभेद पैदा हो तो क़ुर्आन को हम श्रेष्ठता देते हैं और विशेष कर क़िस्सों में जो सामूहिक रूप से रद्द करने के योग्य भी नहीं हैं। और हम इस बात पर ईमान लाते हैं कि ख़ुदा तआला के सिवा कोई पूजनीय नहीं है और सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके रसूल और ख़ातमअलअम्बिया हैं और हम ईमान लाते हैं कि वास्तव में फ़रिश्ते हैं, क़यामत सच है, और हिसाब किताब का दिन सच और जन्नत (स्वर्ग) सच और जहन्नुम (नरक) सच है। और हम ईमान लाते हैं कि जो कुछ अल्लाह तआला ने क़ुरआन शरीफ में फरमाया है और जो कुछ हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है, वह सब उपरोक्त बयान के अनुसार सच है। और हम ईमान लाते हैं कि जो व्यक्ति इस शरीअते इस्लाम (इस्लामी सिद्धान्त) में से एक अंश भी कम करे या एक अंश अधिक करे या कर्त्तव्यों का पालन न करने और नाजायज़ बातों को जायज़ बनाने की नींव डाले वह बेईमान और इस्लाम से दूर हटने वाला है। और हम अपनी जमाअत को नसीहत करते हैं कि वह सच्चे दिल से इस क़लिमा तय्यबा पर ईमान रखे कि :- ''ला इलाहा इल्लल्लाहो मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह'' (अर्थात् अल्लाह तआला के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं, हज़रत मुहम्मद (मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) अल्लाह तआला के रसूल (अवतार) हैं। और इसी पर मरें, और तमाम रसूल व अवतार और तमाम किताबें जिनकी सच्चाई क़ुर्आन शरीफ से स्पष्ट है उन सब पर ईमान लाएं और 'रोज़ा' (उपवास) और 'नमाज़' और 'ज़कात' और 'हज' और ख़ुदा तआला और उस के रसूल के नियुक्त सारे कर्त्तव्यों को कर्त्तव्य समझ कर और सारी रोकी गई बातों से रुक कर ठीक-ठीक इस्लाम पर क़ायम हों। अत: वे सारी बातें जिन पर पुराने बुज़ुर्ग सम्पूर्ण रूप से सहमत थे और वे उन्हें कार्य रूप भी देते थे। और वे बातें जो अहले सुन्नत की सामूहिक दृष्टि में इस्लाम कहलाती हैं उन सब को मानना फ़र्ज़ है। और हम आकाश और धरती को इस बात पर साक्षी बनाते हैं कि यही हमारा धर्म है।''

इसी प्रकार आपने फरमाया :-

''हम तो रखते हैं मुसलमानों का दीं
दिल से हैं ख़ुद्दामे ख़त्मुल मुरसलीं।
शिरक और बिदअत से हम बेज़ार हैं
ख़ाके राहे अहमदे मुख़्तार हैं।
सारे हुकमों पर हमें ईमान है
जानो दिल इस राह पर क़ुर्बान हैं।''

(अनुवादक शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

ख़ुत्बः जुमअः

आज अल्लाह तआला की कृपा से जमाअत अहमदिया कनाडा का जलसा सालाना शुरू हो रहा है। जलसा का यह उद्देश्य है कि रूहानियत में तरक्की हो। अगर रूहानित में तरक्की नहीं तो जलसा में शामिल होना व्यर्थ है।

यह तो अब संभव नहीं रह गया कि अहमदियों की एक बड़ी संख्या जलसा के लिए कादियान जाए, न ही यह संभव है कि जहां समय का ख़लीफा मौजूद है वहां अहमदियों की संख्या जलसा में शामिल हो सके। दुनिया में जिस तरह जमाअतें फैल रही हैं और तरक्की कर रही हैं ज़रूरी था कि हर देश में जहां भी जमाअत है इस तरीके पर जलसे आयोजित किए जाएँ जिस तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में होते थे।

प्रत्येक अहमदी का दूसरे अहमदी के साथ प्यार और भाईचारा के संबंध में तरक्की करनी चाहिए और यह संबंध काफी मजबूत और स्थिर हो जाए कि कोई बात इस संबंध में रुकावट न डाल सके, उसे तोड़ न सके।

जमाअत अहमदिया कैनेडा इस साल अपने देश में स्थापना के पचास साल मना रहा है। हर अहमदी को याद रखना चाहिए कि इसका महत्त्व तो तभी होगा जब हर अहमदी जो कनाडा में रहता है इस बात की कोशिश करे कि हम ने अहमदी होने के बाद जो बैअत का वादा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से बांधा है उसे हम ने पूरा करना है। जो उम्मीदें आप अलैहिस्सलाम ने हम से रखी हैं उन्हें पूरा करना है वरना पचास साल हों या इससे अधिक साल हो इससे क्या फर्क पड़ता है।

आप अलैहिस्सलाम हमसे बैअत लेने के बाद हमारा एक स्तर देखना चाहते हैं जलसों का उद्देश्य भी यही गुणवत्ता प्राप्त करने की कोशिश है। इसलिए इस बात को हमेशा हर अहमदी को सामने रखना चाहिए।

ख़िलाफत अहमदिया के द्वारा आप अलैहिस्सलाम के मिशन के पूरा होने का काम जारी है। जलसों का सिलसिला भी इसी की एक कड़ी है।

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों के हवाले से जमाअत के लोगों को अपने अन्दर पवित्र रूहानी परिवर्तन पैदा करने के लिए अत्यन्त प्रमुख नसीहतें।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 7 अक्तूबर 2016 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۔

आज अल्लाह तआला की कृपा से जमाअत अहमदिया कनाडा का जलसा सालाना शुरू हो रहा है। अल्लाह तआला के फज़ल से प्रतिवर्ष दुनिया की जमाअतें अपने-अपने देश का जलसा आयोजित करती हैं। क्यों? इसलिए कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से आज्ञा पाकर इस का आरम्भ किया था।

(उद्धरित आइना कमालाते इस्लाम, रूहानी ख़ज़ायन भाग 5 पृष्ठ 611)

और फरमाया कि साल में तीन दिन कादियान में इकट्ठा हों। इसलिए जमा न हों कि हम ने कोई मेला करना है कोई लग़्व और खेल करना है, खेल कूद करना है, सांसारिक लक्ष्यों को प्राप्त करना है, बल्कि इसलिए इकट्ठा हों कि धार्मिक ज्ञान में वृद्धि हो और जानकारी व्यापक हों। इसलिए इकट्ठा हों कि अल्लाह तआला की पहचान में तरक्की हो।

(उद्धरित आसमानी फैसला, रूहानी ख़ज़ायन भाग 4 पृष्ठ 351-352)

मअरफत (अनुभूति) क्या है? किसी चीज़ का ज्ञान होना, इसकी गहराई को जानना यह मअरफत है। आप किस मअरफत में तरक्की करवाना चाहते थे।? आप चाहते थे कि केवल सतही तौर पर ही इस बात का इज़हार न हो कि हम मुसलमान हैं या हम कलमा ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मद रसूसुल्लाह पढ़ने वाले हैं बल्कि इस्लाम लाने के बाद अपने ईमान में तरक्की करनी है। आपने यह फरमाया कि ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मद रसूलुल्लाह पढ़ते हो तो इस बात की तलाश करो कि अल्लाह तआला है और हम से क्या चाहता है। अल्लाह तआला के अधिकार क्या हैं और हम कैसे अदा करें। अल्लाह तआला के आदेश को कैसे समझना है और उन पर कैसे अनुकरण करना है। हम ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला का रसूल माना है, ख़ातमुल अंबिया माना है तो फिर आप के आदेशों और आप की सुन्नत को जानने और उस पर अनुकरण करने के रास्ते तलाश करने हैं।

(उद्धरित मलफूज़ात भाग 3 पृष्ठ 83,संस्करण 1985ई यू.के)

और आप की ज़िन्दगी क्या था? उसकी मअरफत कैसे प्राप्त हो? इसके लिए हज़रत आयशा रज़ियल्लाहो अन्हा का जवाब हर विस्तार पर प्रभावी है जो आप ने एक सवाल करने वाले को दिया था जब उसने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी और सीरत के बारे में पूछा तो हज़रत आयशा ने कहा कि क्या आप ने कुरआन नहीं पढ़ा।? अत: जो कुरआन कहता है वही आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी की और हर कर्म का विवरण है।

(मुस्नद अहमद बिन हंबल भाग 8 पृष्ठ 144-145 मुस्नद हज़रत आयशा हदीस 25108 प्रकाशक आलम बैरूत1998 ई)

अत: आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में यह वह मअरफत है जो एक मोमिन को प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए, जिसके लिए कुरआन पढ़ना और समझना चाहिए। फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया जलसा का यह उद्देश्य है कि रूहानियत में तरक्की हो। जब मअरफत प्राप्त हो जाए तो केवल ज्ञान की प्राप्ति तक ही यह पहचान न रहे बल्कि उस को आध्यात्मिकता में और कर्म में तरक्की का माध्यम बनना चाहिए। अगर रूहानियत में तरक्की नहीं तो जलसा में शामिल होना व्यर्थ है। फिर आप ने फरमाया कि जलसा का एक फायदा यह है और इसके लिए हर आने वाले को कोशिश करनी चाहिए कि आपस का परिचय बढ़े और केवल परिचय प्राप्त करके दुनिया वालों की तरह क्षणिक संबंध न हो बल्कि प्रत्येक अहमदी का दूसरे अहमदी के साथ प्यार और भाईचारा के संबंध में तरक्की करनी चाहिए और यह संबंध काफी मज़बूत और स्थिर हो जाए कि कोई बात इस संबंध में रुकावट न डाल सके, उसे तोड़ न सके।

(उद्धरित आसमानी फैसला, रूहानी ख़ज़ायन भाग 4 पृष्ठ 352)

फिर आप ने फरमाया कि तक्वा में तरक्की करो।

(उद्धरित शहादतुल कुरआन, रूहानी ख़ज़ायन भाग पृष्ठ 394)

यह जलसा के उद्देश्यों में से बहुत महत्त्वपूर्ण है कि इस के बिना एक मोमिन वास्तविक मोमिन नहीं बन सकता और तक्वा यही है कि जो ज्ञान प्राप्त किया, जो आध्यात्मिकता की गुणवत्ता हासिल की अल्लाह तआला और उसके रसूल से जो प्यार का संबंध स्थापित किया है। आपस के संबंध में जो सौंदर्य पैदा किया है इसमें अब स्थायित्व पैदा करो उसे नियमित रखो। इसे अपने जीवन का हिस्सा बनाओ।

अत: ये वे बातें थीं जिसके लिए आप अलैहिस्सलाम ने जलसा का आयोजन किया और फरमाया कि हर साल लोग इस उद्देश्य के लिए कादियान आया करें। कितने मुबारक जलसे होते थे जिस में ख़ुद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम शामिल होकर सीधा जमाअत को उपदेश किया करते थे। जमाअत के लोगों की तरबियत किया करते थे। उनकी आध्यात्मिक प्यास बुझाया करते थे। आप अलैहिस्सलाम के बाद वह बातें तो नहीं हो सकतीं नबी का स्थान तो उसी के लिए विशेष होता है और जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार आया जो ख़ुदा तआला के वादे के अनुसार आया जिसे आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की गुलामी में धर्म के पुनरोद्धार के लिए भेजा था, निश्चित रूप से वह अपना एक स्थान रखता था लेकिन यह भी अल्लाह तआला की कृपा है कि इससे ख़बर पाकर आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि आप के बाद कुदरते सानिया की प्रणाली जारी हुई जो ख़िलाफत की प्रणाली है। अत: वह जारी हुआ और ख़िलाफत अहमदिया के द्वारा आप अलैहिस्सलाम के मिशन के पूरा होने का काम जारी है। जलसों का सिलसिला भी इसी की एक कड़ी है। कादियान में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के देहान्त के बाद ख़िलाफत की प्रणाली जब जारी हुई तो ख़िलाफत की उपस्थिति में लगभग चालीस साल तक जलसे आयोजित होते रहे फिर ख़िलाफत के पाकिस्तान हिजरत कर जाने के बाद रबवा में जलसे आयोजित होते रहे और साथ ही जमाअत का विस्तार विभिन्न देशों में होने लगा। यद्यपि कि बाहरी मिशन कादियान से हिजरत से पहले भी स्थापित होने शुरू हो गए थे विशेष रूप से अफ्रीका में बड़ी मज़बूत जमाअत स्थापित होने लग गई थीं लेकिन अधिक मज़बूती और विस्तार हर आने वाले दिन और महीने और साल में पाकिस्तान से बाहर की जमाअतों में होती रही, यहाँ तक दुश्मन ने इस तरक्की को देखकर अहमदियों के ख़िलाफ बहुत क्रूर कानून सरकार द्वारा जारी करवाया जिसके कारण समय के ख़लीफा को वहां से हिजरत करनी पड़ी और साथ ही वहां से अहमदियों की एक बड़ी संख्या ने हिजरत की। हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे के लंदन हिजरत के बाद जहां लंदन जलसों ने एक नया मोड़ लिया और विस्तृत हो गए वहाँ अन्य देशों में भी जलसों में एक नया रंग पैदा हो और फिर जो प्रतिदिन उन्नति होती चली गई और आज हर जगह जलसों में एक नए रंग हैं। यह तो अब संभव नहीं रह गया कि अहमदियों की एक बड़ी संख्या जलसा के लिए कादियान जाए, न ही यह संभव है कि जहां समय का ख़लीफा मौजूद है वहां अहमदियों की संख्या जलसा में शामिल हो सके। दुनिया में जिस तरह जमाअतें फैल रही हैं और तरक्की कर रही हैं ज़रूरी था कि हर देश में जहां भी जमाअत है इस तरीके पर जलसे आयोजित किए जाएँ जिस तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में होते थे। साल में कम से कम एक बार आप अलैहिस्सलाम ने हमें अपनी हालतों में परिवर्तन पैदा करने के लिए प्रशिक्षण के उद्देश्य के लिए इकट्ठा होने का फरमाया था।

अत: आप भी आज यहाँ इसलिए इकट्ठा हैं कि इस लक्ष्य को पूरा करें जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उल्लेख किया था। हर साल आप इस उद्देश्य के लिए इकट्ठा होते हैं और इस वर्ष विशेष रूप से इसलिए यहां एकत्र हुए हैं कि जमाअत की स्थापना के पचास वर्ष पूरे हो गए हैं। कुछ को इससे शायद मतभेद भी होगा लेकिन कोई न कोई मानक निर्धारित करना पड़ता है जब से जमाअत का पंजीकरण हुआ है उसे मानक निर्धारित करके पचास साल गिने जाते हैं वरना कहा जाता है कि पहले अहमदी तो शायद यहाँ 1919 ई में ही आ गए थे। तो बहरहाल जमाअत इस साल अपनी स्थापना के इस देश में पचास साल मना रही है और इसी वजह से अमीर साहिब ने विशेष ज़ोर देकर मुझे भी बुलाया कि जमाअत कनाडा इस साल पचास साल के हवाले से विभिन्न प्रोग्राम भी कर रही और यह जलसा भी इस दृष्टि से उम्मीद है कि बड़ा हो जाएगा। इसलिए आएं। जैसा कि मैंने कहा कि जब समय के ख़लीफा की हाज़री हो तो लोग भी आते हैं। इस साल इसलिए मेरे आने के कारण से विदेशों से भी काफी लोग आए होंगे और आ रहे होंगे।

बहरहाल इस साल आप लोग यहां के रहने वाले अहमदी विशेष महत्त्व दे रहे हैं लेकिन हर अहमदी को याद रखना चाहिए कि इसका महत्त्व तो तभी होगी जब हर अहमदी जो कनाडा में रहता है इस बात की कोशिश करे कि हम ने अहमदी होने के बाद जो बैअत का वादा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से बांधा है उसे हम ने पूरा करना है। जो उम्मीदें आप अलैहिस्सलाम ने हम से रखी हैं उन्हें पूरा करना है वरना पचास साल हों या इससे अधिक साल हों इससे क्या फर्क पड़ता है।

जैसा कि मैंने कहा कि पाकिस्तान के हालात की वजह से कई अहमदी भी पाकिस्तान से हिजरत करके दूसरे देशों में गए और आप में से अधिकांश इस हिजरत के परिणाम में यहां आए हैं। आप ने धार्मिक स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए हिजरत की है और यहां की सरकार ने आपको इसलिए यहां की नागरिकता दी ताकि आप आज़ादी से अपनी धार्मिक शिक्षाओं का पालन कर सकें। इसलिए यहां के रहने वाले हर अहमदी की इस अहद के कि अतिरिक्त जो वह करता है कि धर्म को दुनिया में प्राथमिकता दूंगा। (मल्फूज़ात भाग 2 पृष्ठ 70 संस्करण 1985 यू.के) एक बड़ी ज़िम्मेदारी है कि जिस उद्देश्य के लिए हिजरत की है उसे पाने की कोशिश करें। अपनी नस्लों को बताएँ कि हम पाकिस्तान में ऐसे हालात से आए और यहां जो हालात बेहतर हुए हैं वे इस बात की मांग करते हैं कि हम अल्लाह तआला के सच्चे शुक्रगुज़ार बन्दे बनते हुए उस के आदेश का पालन करने वाले बनें। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से बैअत के समय भी जो वादा दिया है हम उसे पूरा करें जिसमें से एक यह भी है कि कुरआन की हकूमत को पूर्ण रूप से अपने ऊपर लागू करूंगा।

(इज़ाला औहाम रूहानी ख़ज़ायन भाग 3 ,पृष्ठ 564)

उस ज़माना में जो व्यापक रंग में ये सब बातें जो आदेश हैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमारे सामने रखी हैं उसे देखने की ज़रूरत है क्योंकि आप अलैहिस्सलाम से बेहतर अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कलाम और बातों को और कोई नहीं समझ सकता। आप अलैहिस्सलाम ने जिस राह पर मार्गदर्शन किया है उसी को अपना कर हम धार्मिक आदेश और अल्लाह तआला के कलाम पर अधिक विचार करके अपने मन को प्रज्वलित और अपने ईमानों को दृढ़ कर सकते हैं। इस संबंध में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें अनगिनत उपदेश फरमाए जो ज्ञान और कर्म में दृढ़ करने के लिए आवश्यक हैं। आप अलैहिस्सलाम हमसे बैअत लेने के बाद हमारा एक स्तर देखना चाहते हैं जलसों का उद्देश्य भी यही गुणवत्ता प्राप्त करने की कोशिश है। इसलिए इस बात को हमेशा हर अहमदी को सामने रखना चाहिए। इस समय शायद कुछ लोग सिर्फ जलसा में तो आ गए लेकिन पूरे ध्यान से न सुन रहे हों। कुछ थके होंगे सफर की वजह से शायद ऊंघ भी रहे हों उन सभी से मैं कहता हूँ कि ये बातें जो बयान करने लगा हूँ उन्हें ध्यान से सुनें और उस समय ध्यान से अपने होश और हवास रखते हुए बैठने की कोशिश करो। आधा घंटा या चालीस मिन्ट कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो आदमी सहन न कर सके और जलसा में आने का उद्देश्य तभी पूरा होगा जब आप ये बातें भी सुनें जो मैं कह रहा हूँ और वे सभी बातें भी ध्यान से सुनने और उन पर अनुकरण करने की कोशिश करें जो बाकी वक्ता अपने भाषणों में बयान करेंगे। बहुत सी बातें ऐसी होती हैं जो ईमान बढ़ाने वाली भी हैं अध्यात्म में उन्नति करने वाली भी हैं और अस्थायी तौर पर सिर्फ नारे लगाकर उनसे आन्नद न उठाएं बल्कि फिर उन्हें अपने जीवन का हिस्सा भी बनाएं।

जैसा कि मैंने कहा कुछ बातें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के शब्दों में वर्णन करूंगा ताकि आप अलैहिस्सलाम की वाणी सीधे कानों में पड़े और मन में उतरे और वह आध्यात्मिक परिवर्तन पैदा हो जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमसे चाहते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह फरमाते हैं कि

"मैंने कई बार अपनी जमाअत को कहा है कि तुम केवल इस बैअत पर ही भरोसा न करना इस की वास्तविकता तक जब तक नहीं पहुंचोगे तब तक मुक्ति नहीं। फरमाया छिलके पर सब्र करने वाला मेरुदण्ड से वंचित रहता है। अर्थात् अगर आप केवल इस बात पर ख़ुश हो जाओ कि मुझे फल का छिलका या खोल मिल गया है तो यह तो व्यर्थ बात है। मूल फल है जिस से तुम वंचित रह जाओगे। बुद्धिमान वही है जो फल प्राप्त करने की कोशिश करता है न कि केवल छिलका। फिर आप ने फरमाया कि अगर मुरीद ख़ुद अनुकरण करने वाला नहीं तो पीर की बुज़र्गी उसे

कुछ लाभ नहीं देती। अर्थात अगर बैअत में आए हो और अपनी व्यावहारिक हालत ठीक नहीं है। केवल इस बात पर ख़ुश हो कि मैंने जिसे माना है वह अल्लाह तआला का भेजा हुआ है अल्लाह तआला के भेजे हुए की महिमा अपनी जगह बेशक सच्च है ठीक है लेकिन मानने वाले को लाभ उस बुज़ुर्गी से तभी होगा जब इस का कर्म भी बुज़ुर्गी से मेल रखता हो उसके कहने के अनुसार होगा। आपने फरमाया "जब कोई डाक्टर किसी को नुस्ख़ा दे और वह नुस्ख़ा लेकर शेल्फ में रख दे तो उसे कभी लाभ नहीं होगा क्योंकि लाभ तो उस पर लिखे हुए कर्म का परिणाम था।" जो नुस्खा दिया गया है उसके अनुसार दवाई बनाओ या वह दवा ख़रीदो फिर उपयोग करो तभी तो लाभ होगा। फरमाया कि "जिससे वह स्वयं वंचित है" अर्थात ख़ुद ही नुस्खा तो ले लिया लेकिन अनुकरण न करके, उसका उपयोग न करके वंचित कर दिया। फरमाया किश्ती नूह का बार बार अध्ययन करो और तदनुसार अपने आप को बनाओ" और फिर आप फरमाते हैं قَدۡ اَفۡلَحَ مَنۡ زَکّٰىہَا (अश्शमस 10) अर्थात निश्चित रूप से वह सफल हो गया जिसने तक्वा को परवान चढ़ाया। फरमाया "यूं तो हज़ारों चोर, व्यभिचारी, दुष्ट, शराबी, बदमाश आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत में होने का दावा करते हैं मगर क्या वह वास्तव में ऐसे हैं? हरगिज़ नहीं उम्मती वही है जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षाओं पर पूरा चलने वाला है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 4 पृष्ठ 232-233 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

फिर एक अवसर पर बैअत की गुणवत्ता के बारे में अधिक खोलकर फरमाया कि

"इसी तरह जो बैअत और ईमान का दावा करता उस को टटोलना चाहिए कि क्या मैं छिलका ही हों या मेरुदण्ड। जब तक मेरुदण्ड पैदा न हो ईमान, प्यार, आज्ञाकारिता, बैअत, आस्था ,मुरीदी, इस्लाम का दावा करना सच्चा दावा नहीं है। याद रखों कि यह सच्ची बात है कि अल्लाह तआला के समक्ष मेरुदण्ड के अतिरिक्त छिलके की कुछ भी कीमत नहीं। ख़ूब याद रखो कि पता नहीं मौत किस समय आ जाए लेकिन यह निश्चित बात है कि मौत ज़रूर है। इसलिए केवल दावे पर कभी भरासो न करो और ख़ुश न हो जाओ। वह कदापि लाभ दायक चीज़ नहीं। जब तक मनुष्य अपने आप में बहुत मौतें वारिद न करे और कई परिवर्तन और इंकलाबों में से होकर न निकले वे मानवता के मूल उद्देश्य को नहीं पा सकता।

(मल्फ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 167 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

ये मौतें क्या हैं? यह धर्म को दुनिया में प्राथमिकता करना है दुनिया की चकाचौंध सामने है। कदम कदम पर यहाँ इन देशों में विशेष रूप से अल्लाह तआला के रास्ते से हटाने की कोशिश में सांसारिक साधन किए गए हैं उनसे बचना। फिर आप फरमाते हैं कि

"अब दुनिया की हालत देखो कि हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तो अपने कर्म से यह दिखाया कि मेरा मरना और जीना सब कुछ अल्लाह तआला के लिए है और या अब दुनिया में मुसलमान हैं। किसी से कहा जाए कि क्या तू मुसलमान है तो कहता है अल्हम्दो लिल्लाह। जिसका कलमा पढ़ता है उसके जीवन का नियम तो ख़ुदा के लिए किया था, लेकिन यह दुनिया के लिए जीता और दुनिया के लिए ही मरता है। उस समय तक कि अन्तिम समय शुरू हो जाए।" (अंतिम समय आ जाए सांस निकलने लगे।) फरमाया कि "ख़ुश हो जाना बुद्धिमान का काम नहीं है। किसी यहूदी को एक मुसलमान ने कहा कि तू मुसलमान हो जा। उसने कहा तू केवल नाम ही पर खुश न हो" (कि तू मुसलमान है। यहूदी ने उसे कहा कि) "मैंने अपने लड़के का नाम ख़ालिद रखा था और शाम से पहले ही दफन कर आया।" ख़ालिद नाम रखने से अनंत काल तो नहीं मिला उस की उम्र लंबी तो नहीं हो गई। कहता है शाम को बेचारा बच्चा मर गया और दफन कर आया।

फरमाते हैं कि "अत: वास्तविकता को तलाश करो। केवल नामों पर राज़ी न हो जाओ। कितने शर्म की बात है कि इंसान महान नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का उम्मती कहला कर काफिरों जैसा जीवन व्यतीत करे। तुम अपने जीवन में मुहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नमूना दिखाओ और वही स्थिति पैदा करो।

(मल्फ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 187 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

एक बार कुछ व्यक्ति आपकी सेवा में हाज़िर हुए और फिर बैअत कर ली। बैअत के बाद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उन्हें कुछ उपदेश फरमाए। आपने फ़रमाया कि "आदमी को बैअत कर के केवल यही नहीं मानना चाहिए कि यह सिलसिला सच्चा है और इतना मानने से उसे बरकत होती है।" फरमाया कि "नेक बनो मुत्तकी बनो।..... यह समय दुआओं में बिताओ।" फिर अधिक नसीहत फरमाई आपने फरमाया कि "कुरआन शरीफ में अल्लाह तआला ने ईमान के साथ उचित कर्म भी रखा है उचित कर्म उसे कहते हैं जिस में एक थोड़ा सा फसाद न हो। याद रखो कि इंसान के कर्म पर हमेशा चोर पड़ा करते हैं। वे क्या हैं। दिखावा (कि जब इंसान दिखावे के लिए एक कर्म करता है।) गर्व (कि वह कर्म करके अपने नफ्स में ख़ुश होता है) कि मैंने बड़ी भलाई का काम कर दिया "और विभिन्न प्रकार के अधर्म और गुनाह जो उससे होते हैं उनसे कर्म नष्ट हो जाते हैं। उचित कर्म वह है जिस में अन्याय, गर्व, दिखावा, अहंकार और मानवाधिकार को मारने का विचार तक न हो।" फरमाया कि "जैसे आख़िरत में मनुष्य उचित कर्म से बचता है वैसे ही दुनिया में भी बचता है। अगर एक आदमी भी सारे घर में उचित कर्म वाला हो तो सब घर बचा रहता है। समझ लो कि जब तक तुम में उचित कर्म न हो केवल मानना लाभ नहीं देता। एक डाक्टर नुस्ख़ा लिख कर देता है तो इससे यह मतलब होता है कि जो कुछ लिखा है वह ले कर उसे पीए। अगर वह इन दवाओं का इस्तेमाल न करे और नुस्ख़ा लेकर रख छोड़े, तो उसे क्या लाभ होगा। फरमाते हैं कि अब इस समय तुम ने तौबा की है अब भविष्य में ख़ुदा तआला देखना चाहता है कि तौबा से अपने आप को तुम ने कितना साफ किया। अब समय है कि ख़ुदा तआला तक्वा के माध्यम से अंतर करना चाहता है। कई लोग हैं कि ख़ुदा पर शिकवा करते हैं और अपने नफ्स को नहीं देखते। मनुष्य के अपने नफस के ही अत्याचार होते हैं वरना ख़ुदा तआला रहीम व करीम है। जो इंसान अगर कुछ नुकसान उठाता है तो अपने नफ्स के कारण उठाता है। अपने नफ्स पर अत्याचार करता है। अल्लाह तआला किसी पर अत्याचार नहीं करता। वह तो बड़ा दयावान और दयालु है। फरमाया कि "कुछ आदमी ऐसे हैं कि उन्हें गुनाह की ख़बर है और कुछ ऐसे हैं कि उन्हें गुनाह की ख़बर नहीं होती।" वे इतने आदी हो जाते हैं। इसलिए अल्लाह तआला ने हमेशा के लिए तौबा का प्रावधान किया है। इसलिए तौबा अधिक करनी चाहिए और विशेष रूप से इन दिनों में जब आप दुआएं कर रहे हैं जलसा का माहौल ही दुआओं का है। जहां दरूद पढ़ रहे हैं। वहाँ तौबा भी बहुत अधिक करें। फरमाया कि "मनुष्य प्रत्येक गुनाह के लिए चाहे वह प्रकट में हों चाहे भीतर, चाहे वह जानता हो या न हो और हाथ और पैर और ज़बान और नाक और आंख और सभी प्रकार के गुनाहों से इस्तिग़फार करता रहे। आजकल आदम की दुआ पढ़नी चाहिए।

رَبَّنَا ظَلَمۡنَاۤ اَنۡفُسَنَا وَ اِنۡ لَّمۡ تَغۡفِرۡ لَنَا وَ تَرۡحَمۡنَا لَنَکُوۡنَنَّ مِنَ الۡخٰسِرِیۡنَ ﴿۲۴﴾

(सूरह अलआराफ 24) कि हमारे रब्ब! हम ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया और अगर तूने हमें क्षमा न किया और हम पर दया न की तो घाटा पाने वालों में से हो जाएंगे। फरमाते हैं "यह दुआ पहले से ही स्वीकार हो चुकी है। जब से यह दुआ अल्लाह तआला ने सिखाई तब से यह स्वीकार हो गई। लापरवाही से जीवन मत व्यतीत करो। यह दुआ सिखाई ही इसलिए है कि स्वीकार की गई। इसलिए गंभीरता से यह दुआ करनी चाहिए। फरमाया कि "लापरवाही से जीवन व्यतीत मत करो जो व्यक्ति लापरवाही से जीवन व्यतीत नहीं करता कभी उम्मीद नहीं कि वह किसी आदत से बढ़ कर बला में पीड़ित हो।" अगर लापरवाही से जीवन नहीं गुज़र रहा तो किसी बला में पीड़ित नहीं हो सकते। "कोई बला बिना आज्ञा के नहीं आती।" फरमाया कि "जैसे कि मुझे यह दुआ इल्हाम हुई थी कि رَبِّ کُلُّ شَیۡءٍ خَادِمُکَ رَبِّ فَاحۡفَظۡنِیۡ وَانۡصُرۡنِیۡ وَارۡحَمۡنِیۡ यह भी दुआ बहुत पढ़नी चाहिए।

(मल्फ़ूज़ात भाग 4 पृष्ठ 274-276 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

एक अवसर पर एक जलसा में हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहब ने निवेदन किया कि हुज़ूर आपसी सहमति और एकता पर भी कुछ फरमाए। इस पर आप ने कुछ नसीहतें फरमाईं। जिनका कुछ भाग मैं यहाँ वर्णित करता हूँ। फरमाया कि

"मैं दो ही मस्ले लेकर लाया हूं। पहला ख़ुदा की तौहीद धारण करो। दूसरे आपस में प्यार और सहानुभूति प्रकट करो। वह नमूना दिखलाओ कि दूसरों के लिए चमत्कार हो। यही दलील थी जो कि सहाबा में पैदा हुई थी। کُنۡتُمۡ اَعۡدَآءً فَاَلَّفَ بَیۡنَ قُلُوۡبِکُمۡ (आले इम्रान 104) याद रखो तालीफ एक चमत्कार है। याद रखो जब तक तुम प्रत्येक से ऐसा न हो कि जो अपने लिए पसंद को वह अपने भाई के लिए करना वह मेरी जमाअत में नहीं है। फरमाया कि "याद रखो द्वेष का अलग होना महदी का चिन्ह है और क्या वह निशान पूरा न होगा।?" अर्थात महदी के आने पर आपस में हसद और द्वेष दूर होंगे तो फरमाया कि पूरी न होगी?" वह जरूर होगी तुम क्यों धैर्य नहीं करते। जैसे चिकित्सीय मस्ला है कि जब तक कुछ रोगों में ध्वस्त न किया जाए, रोग दूर नहीं होता। मेरे वजूद से इंशा अल्लाह तआला एक

सालेह (नेक) जमाअत पैदा होगी। आपसी दुश्मनी का कारण क्या है। कंजूसी है, गर्व है। ख़ुद पसंदी है। मेरे वुजूद से यह जमाअत तो इंशा अल्लाह तआला बनेगी और दुनिया में अल्लाह तआला की कृपा से बड़े मुख़लेसीन पैदा हो रहे हैं फरमाया कि "जो अपनी भावनाओं पर काबू नहीं पा सकते और परस्पर प्रेम और भाईचारा से नहीं रह सकते जो ऐसे हैं वे याद रखें कि वे कुछ दिन के मेहमान हैं। जब तक कि उत्कृष्ट नमूना न दिखाएँ। मैं किसी के कारण से अपने ऊपर आपत्ति लेना नहीं चाहता। ऐसा व्यक्ति जो मेरी जमाअत में से होकर मेरी इच्छा के अनुसार न हो वह सूखी टहनी है अगर माली काटे नहीं तो क्या करे। सूखी टहनी दूसरी हरी शाखा के साथ रहकर पानी तो चूसती है मगर वह उसे हरा नहीं कर सकती बल्कि वह शाखा दूसरी को भी ले बैठती है। इसलिए डरो मेरे साथ वह न रहेगा जो अपना इलाज न करे।"

(मल्फूज़ात भाग 2 पृष्ठ 48-49 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

अत: वे लोग जो आपस में द्वेषों को बढ़ाते हैं उनके लिए बड़े भय का स्थान है। जब हम ने इस युग में उस व्यक्ति को माना है जो हमारे सुधार के लिए आया है तो हमें इसके लिए प्रयास भी करने की ज़रूरत है उसकी बातों को मानने की ज़रूरत है और उन पर अनुकरण करने की ज़रूरत है।

मानवता के बारे में बताते हुए आप फ़रमाते हैं कि मानवता है और मानवता के मापदंड क्या हैं और एक मोमिन को कैसा होना चाहिए। इस बारे में आप ने फरमाया कि "इंसान वास्तव में उनसान से लिया गया है अर्थात जिस में दो वास्तविक उनस हों। (संबंध हों) "एक अल्लाह तआला से और दूसरा मानव जाति की सहानुभूति। जब ये दोनों उनस उस में पैदा हो जाएं तब इंसान कहलाता है और यही वह बात है जो मनुष्य का मेरुदण्ड कहलाती है।" यही बात है जो मानवता का सार है कि दो संबंध पैदा करो। एक ख़ुदा तआला से संबंध पैदा करो। एक आपस के अधिकारों को दो। फरमाया "और उसी स्थान पर मनुष्य अक्ल वाला कहलाता है जब तक यह नहीं कुछ भी नहीं। हज़ारों दावा कर दिखाओ मगर अल्लाह तआला के निकट, इसके नबी और फरिशतों के निकट (ये सब) तुच्छ है।"

(मल्फूज़ात भाग 2 पृष्ठ 48-49 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

फिर इस बात को स्पष्ट करते हुए कि अल्लाह तआला दुनिया के धंधों और कारोबारों से मना तो नहीं करता बल्कि आदेश देता है कि सुस्त न बैठो और काम करो लेकिन लक्ष्य दुनिया न हो बल्कि अल्लाह तआला की प्रसन्नता हो। यह हमेशा सामने रहना चाहिए। जहां दुनिया की ख़ुशी प्राप्त करने की कोशिश हो वहाँ आख़िरत की भलाइयां पाने के लिए भी पूरी कोशिश की ज़रूरत है।

इस विषय का वर्णन करते हुए एक अवसर पर आप ने फरमाया कि अल्लाह तआला ने जो यह दुआ की शिक्षा फरमाई है कि رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنۡیَا حَسَنَۃً وَّ فِی الۡاٰخِرَۃِ حَسَنَۃً (अल्बकर: 202) इस में दुनिया को प्राथमिकता दी है लेकिन किस दुनिया को? हसनतुद्दुनिया जो आख़िरत में नेकियों का कारण हो जाए। इस दुआ की शिक्षा से साफ समझ में आ जाता है कि मोमिन को दुनिया को हासिल करने में "हसनतुद्दुनिया" का ख्याल रखना चाहिए और साथ ही "हसनतुद्दुनिया" के शब्द में दुनिया प्राप्त करने के उन सारे उत्तम माध्यम का वर्णन आ गया है जो एक मोमिन मुसलमान को दुनिया के प्राप्त करने के लिए धारण करनी चाहिए। दुनिया को हर ऐसे तरीके से प्राप्त करो जिस के अपनाने से भलाई और ख़ूबी हो। तो दुनिया को प्राप्त करना मना नहीं लेकिन इसलिए हासिल करो और इस तरह से प्राप्त करो कि इसमें भलाई हो ख़ूबी हो न कि दूसरों को क्षतिग्रस्त कर दूसरों के अधिकार छीन करके, दूसरों के मालों पर कब्ज़ा करके।" फरमाया "न वे तरीके जो किसी दूसरे मनुष्य को पीड़ा पहुंचाने का कारण हों न साथियों में किसी लज्जा का कारण। एसी दुनिया वास्तव में हसनतुल आख़िरत का कारण होगी।

(मल्फूज़ात भाग 2 पृष्ठ 91-92 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

ऐसी दुनिया जो तुम कमाओगे तो यह दुनिया आख़िरत के लिए भी नेकियों का कारण बनेगी क्योंकि एसी दुनिया कमाने वाले तो अल्लाह तआला के लिए और उसकी सृष्टि के लिए इस धर्म के लिए खर्च करने वाले भी होते हैं।

फिर आप फरमाते हैं कि "हमारी जमाअत में वही प्रवेश करता है जो हमारी शिक्षा को अपनी नियमावली करार देता है और अपनी हिम्मत और प्रयास के अनुसार उस पर अनुकरण करता है लेकिन जो सिर्फ नाम रख कर शिक्षा के अनुसार कार्य नहीं करता वह याद रखे ख़ुदा तआला ने इस जमाअत को एक विशेष जमाअत बनाने का इरादा किया है और कोई आदमी जो दरअसल जमाअत में नहीं है केवल नाम लिखाने से जमाअत में नहीं रह सकता।" अर्थ यह है कि वास्तव में अगर जमाअत की शिक्षा का पालन नहीं कर रहा और इन सब बातों का पालन नहीं करता तो फरमाया कि "केवल नाम लिखाने से जमाअत में नहीं रह सकता। इस पर कोई न कोई समय ऐसा आ जाएगा कि वे अलग हो जाएगा। इसलिए जहां तक हो सके अपने कर्मों को इस शिक्षा के अधीन करो जो दी जाता है। कर्म पंखों की तरह हैं बिना कर्मों के इंसान आध्यात्मिक उन्नतियों के लिए उड़ नहीं सकता।" जिस तरह पक्षी पंखों से उड़ते हैं मनुष्य के कर्म जो हैं वे उसे आध्यात्मिक रूप से उड़ाते हैं और उन उच्च लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर सकता जो उन के नीचे अल्लाह तआला ने रखे हैं। पक्षियों में समझ है अगर वह समझ से काम न लें तो जो काम उनसे होते हैं न हों सकें। जैसे शहद की मक्खी में अगर समझ न हो तो वह शहद नहीं निकाल सकती और इसी तरह ख़त ले जाने वाले कबूतर जो होते हैं।" कबूतरों का प्रशिक्षण करते हैं जो ख़त एक जगह से दूसरी जगह ले जाते हैं। "उन्हें अपनी समझ से कितना काम लेना पड़ता है। कितनी दूरस्थ मंजिलें वे तय करते हैं।" पुराने ज़माने में इसी का इस्तेमाल किया जाता था "और ख़तों को पहुंचाते हैं। इसी तरह से पक्षियों से अजीब अजीब काम लिए जाते हैं। इसलिए पहले ज़रूरी है कि आदमी अपनी समझ से काम ले और सोचे जो काम करने लगा हूँ ये अल्लाह तआला के आदेशों के नीचे और ख़ुशी के लिए है या नहीं। इसलिए हर काम से पहले यह सोचना चाहिए कि जो काम करने लगा हूँ इस काम करने की मुझे धर्म आज्ञा देता है? अल्लाह तआला इस की अनुमति देता है? वैध है कि नहीं है? यह नहीं कि आदमी दुनिया बनाने के लिए हर अवैध तरीके अपनाने शुरू कर दे। फरमाया कि जब यह देख ले और समझ से काम ले तो फिर हाथों से काम लेना ज़रूरी होता है। सुस्ती और उपेक्षा न करे। हां यह देख लेना चाहिए कि शिक्षा सही हो कभी ऐसा भी होता है कि शिक्षा सही है लेकिन आदमी अपनी नादानी और अज्ञानता से या किसी अन्य शरारत या ग़लत बयानी के कारण धोखा में पड़ जाता है इसीलिए खाली ज़हन होकर अनुसंधान करनी चाहिए।

(मल्फूज़ात भाग 2 पृष्ठ 48-49 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

तक्वा का महत्त्व बताते हुए फरमाया कि "हमें जिस बात पर मामूर किया है वह यही है कि तक्वा का मैदान ख़ाली पड़ा है। तक्वा होना चाहिए न कि तलवार उठाओ। यह हराम है। अगर तुम तक्वा करने वाले होगे तो सारी दुनिया तुम्हारे साथ होगी। अत: तक्वा पैदा करो जो लोग शराब पीते हैं या जिनके धर्म के निशानों में शराब पीना अभिन्न अंग है उन्हें तक्वा से कोई संबंध नहीं हो सकता। वे नेकी से युद्ध कर रहे हैं। तो अगर अल्लाह तआला हमारी जमाअत को ऐसी शक्ति दे और उन्हें तौफीक़ दे कि वे बुराइयों से युद्ध करने वाले हों और तक्वा और पवित्रता के क्षेत्र में तरक्की करें। यही बड़ी सफलता है और इससे बढ़कर कुछ प्रभावी नहीं हो सकता। इस समय सारी दुनिया के धर्मों को देख लो कि मूल उद्देश्य तक्वा नहीं है और दुनिया के सम्मानों को ख़ुदा बनाया गया है। सच्चा ख़ुदा छुप गया है और सच्चे ख़ुदा की उपेक्षा की जाती है परन्तु अब ख़ुदा चाहता है कि वह आप ही माना जाए और दुनिया को उसकी पहचान हो। जो लोग दुनिया को ख़ुदा मानते हैं वह अल्लाह तआला पर भरोसा करने वाले नहीं हो सकते।

(मल्फूज़ात भाग 4 पृष्ठ 357-358 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

फरमाया कि "बड़ा अज़ाब आने वाला है।" बड़ा डराया आप ने "और वह दुष्ट और नेक में एक अंतर करने वाला है वह तुम्हें फ़ुर्कान प्रदान करेगा जब देखेगा कि तुम्हारे मन में किसी प्रकार का अंतर बाकी नहीं रहा। अगर कोई बैअत में है तो स्वीकार करता है कि धर्म को दुनिया में प्राथमिकता करूंगा मगर कर्म से वह उसकी सच्चाई और वादे को प्रकट नहीं करता तो ख़ुदा को उस की क्या परवाह है। अगर इस तरह पर एक नहीं सौ भी मर जाते हैं तो हम यही कहेंगे कि उसने अपने अंदर बदलाव नहीं किया और वे सच्चाई और अनुभूति के प्रकाश से जो अंधेरे को दूर करता और मन में विश्वास और आन्नद देता है दूर रहा और इसलिए हलाक हुआ।"

(मल्फूज़ात भाग 4 पृष्ठ 71 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

इसलिए दुनिया की आज भी जो स्थिति है वह चिंता में डालने वाली है कि दुनिया का परिणाम क्या होने वाला है। पिछले दिनों एक साहिब कहने लगे कि दुनिया बड़ी तेज़ी से विनाश की तरफ जा रही है तो हमारा क्या होगा तो जवाब में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने एक शेर में दे दिया है। यहाँ भी विस्तार से समझाया कि

आग है पर आग से वे सब बचाए जाएंगे
जो कि रखते हैं ख़ुदाए ज़ुल अजायब से प्यार

(दुर्रे समीन उर्दू पृष्ठ 154)

अत: यह मूल है कि हम अल्लाह तआला से संबंध मज़बूत करें और जहां

अल्लाह तआला के हक़ अदा करें उसके बन्दों का भी हक़ अदा करने वाले हों। इन नेकियों को प्राप्त करने की कोशिश करें जो ख़ुदा तआला के बताए हुए नियमों के अधीन नेकियां हैं और बुराइयों से बचने की कोशिश करें। इन बुराइयों से बचने की कोशिश करें जो ख़ुदा तआला के निकट बुराईयां हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने खोलकर हमें कुरआन में उल्लेख फरमा दिया है। हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर ईमान लाने के बाद आस्था और व्यावहारिक दृष्टि से मज़बूत से मज़बूत होने की कोशिश करनी चाहिए। यही बातें हैं जो हमारे उद्धार का कारण हैं और यही बातें हैं जो अल्लाह तआला को भी पसंद हैं वरना यह पचास साल या पछहतर साल या सौ साल जो भी जमाअतों में आते हैं इस इंकलाब के बिना कुछ भी नहीं हैं। दुनिया वाले तो बेशक इन बातों पर ख़ुश होते हैं लेकिन धार्मिक जमाअतें नहीं। अगर ख़ुशी की अभिव्यक्ति इसलिए है कि हम ने ख़ुदा तआला के आदेश पर चलने में प्रगति की है और भविष्य में अधिक कोशिश करेंगे तो यह अभिव्यक्ति भी अल्लाह तआला का शुक्र है और जायज़ है लेकिन अगर हमारे कदम हर प्रकार की नेकियों में बढ़ने के बजाय रुक गए हैं या पीछे होने शुरू हो गए हैं तो यह चिंता योग्य बात है। इसलिए हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बातों को सामने रखते हुए अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेश का पालन करने की समीक्षा करने की ज़रूरत है और यह समीक्षा हमेशा करते रहना चाहिए। जब जहां जमाअत के पछहतर साल पूरे हूँ इंशा अल्लाह तआला तो हम कह सकें कि हम ने धर्म को दुनिया में प्राथमिकता देने का जो वादा किया था उस पर न केवल हम स्थापित हैं बल्कि इस में तरक्की करने वाले हैं। अल्लाह तआला सब को इसकी तौफीक़ प्रदान करे।

मैं पहले भी कह चुका हूं जलसा के दिनों में यह तीन दिन विशेष रूप से दुआओं में गुज़ारें और जलसा का जो लक्ष्य है, यहाँ कार्यक्रमों को सुनने का इसमें भरपूर हाज़िर होकर उस को सुनें। अल्लाह तआला सब को इसकी भी तौफीक़ प्रदान करे।

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

झूठ और इफ़्तरा से अपनी बात को रंग दे कर लोगों को धोखा देते हैं। उन्हें ख़ुदा तआला की सुन्नत की ख़बर नहीं है। उन्हें ख़ुदा तआला की पुस्तकों का ज्ञान नहीं या किसी को पता है और मात्र शरारत से ऐसा कहता है। उनके पास तो मानो यूनुस नबी भी झूठा था जिसकी स्पष्ट भविष्यवाणी जिसके साथ कोई शर्त नहीं थी पूरी न हुई। मगर मेरी दो भविष्यवाणियां जिन्हें वे बार बार पेश करते हैं अर्थात आथम और अहमद बैग के दामाद के बारे में अपनी शर्तों के अनुसार पूरी हो गई हैं क्योंकि उनके साथ शर्तें थीं। इन शर्तों के अनुसार देरी हुई। इन लोगों को पता नहीं कि चेतावनी की भविष्यवाणियों में ज़रूरी नहीं होता कि वह पूरी हो जाएं। इस पर सभी नबियों की सहमति है और मैं इस विषय में अधिक लिखना नहीं चाहता क्योंकि इस विवरण में मेरी किताबें भरी पड़ी हैं। आथम तो भविष्य वाणी के अनुसार मर गया और अहमद बैग भी भविष्य वाणी के अनुसार मर गया। अब उसके दामाद के बारे रोते हैं और चेतावनियों की भविष्यवाणियों के बारे में जो अल्लाह तआला की सुन्नत उसे भूल जाती हैं। अगर शर्म और हया और न्याय है तो दो रजिस्टर बनाकर एक रजिस्चर में वे भविष्यवाणियां लिखें जो उनकी समझ में पूरी नहीं हुई और दूसरे रजिस्टर में वह भविष्यवाणियां हम लेखेंगे जिनमें से कोई इंकार नहीं कर सकता। तब उन्हें पता चलेगा कि वह एक नदी के मुकाबला पर जो बहुत शुद्ध है एक बूंद पेश करते हैं जो उनके निकट शुद्ध नहीं।

(हकीकतुल वह्यी, रूहानी खज़ायन,भाग 22, पृष्ठ 180 -182)

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

पवित्र हदीस नबवी

हज़रत साहिबज़ादी अमतुल कुद्दूस बेगम साहिबा

सुनन दारे[1] कुतनी है यह कह रही
सुनो मुझ से आ के हदीस-ए-नबवी
हमारे नबी(स) का जो फर्मान है
हमारा तो उस पर ही ईमान है

रसूल-ए-ख़ुदा ने यही था कहा
इक मर्दे[2] फारस यहां आएगा
जो ईमान सुरय्या[3] पे भी जाऐगा
ज़मीन पर उसे फिर ले आएगा

तुम्हारा यह महदी है हम में से ही
वह होगा यकीनन मेरा उम्मती
मसीहाए[4] दौरां वह ईसा[5] मसील
है यह उसके आने की रौशन दलील

वह आएगा तो चांद गहनाएगा[6]
उसे देख सूरज भी छिप जाएगा
उसे जाकर तुम मेरा कहना सलाम
कि होगा वही आखीरीं का इमाम

हदीसे मुबारक यह पूरी हुई
उसे आए भी एक सदी हो गई
वह आया तो सूरज भी ग्रहण गया
उसे देख कर चांद शर्मा गया

ज़मीं के यह पीछे सिमटने लगे
तो वह चांद की ओट में हो गया
धरो[7] कान गर है ज़रा भी वकूफ[8]
कि कहते हैं क्या यह कसुफ[9] व खसूफ

चलो जल्दी बढ़ के इताअत करो
मसीहे मुहम्मदी की बैअत करो
उसे दो प्यारे नबी का सलाम
यही तो था मन्शाए[10] ख़ैरुलअनाम[11]

(1. हदीस की पुस्तक 2. फारस का रहने वाला 3. सितारे का नाम 4. इस युग का मसीह 5. ईसा जैसा 6. ग्रहण लगना 7. ध्यान पूर्वक सुनो 8. समझ बूझ 9. सूरज व चॉंद ग्रहण 10. इच्छा 11. हज़रत मुहम्मद स.अ.व.)

(है दराज़ दस्ते दुआ मेरा, पृ. 161-160)

☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN XXX
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
PUNHIN 01885 Vol. 1 Thursday 10 November 2016 Issue No. 36

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

रिपोर्ट सालाना इज्तिमा 2016 ई

मजलिस ख़ुद्दामु अहमदिया अत्फालुल अहमदिया भारत

अल्लाह के फज़ल से 15 से 17 अक्तूबर (शनिवार रविवार और सोमवार) 2016 ई मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत का 47 वां और मजलिस अत्फालुल अहमदिया भारत का 38 वां सालाना इज्तिमा 2016 का सफल आयोजन हुआ।

सालाना इज्तिमा का उद्घाटन जमाअत के साथ तहज्जुद की नमाज़ से हुआ। जो मस्जिद अनवार में अदा की गई। नमाज़ फजर तथा दर्स के बाद नाज़िर आला साहिब तथा अमीर जमाअत अहमदिया कादियान ने मज़ार मुबारक सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर सामूहिक दुआ करवाई। इस के बाद एवाने ख़िदमत (कार्यालय ख़ुद्दामु अहमदिया भारत) की ऊपरी छत पर ख़ुद्दामुल अहमदिया का ध्वज फहराया गया । नमाज़ फजर के बाद ख़ुद्दाम एवं अत्फाल के कुछ ज्ञान वर्धक प्रतियोगिताएं मस्जिद अनवार में आयोजित हुईं।

उद्घाटन समारोह:

इस साल सय्यदना हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के इरशाद मुबारक के पालन में सालाना इज्तिमा आधुनिक जलसा गाह में आयोजित हुआ। सालाना इज्तिमा का उद्घाटन समारोह ठीक 9 बजे इजितमा स्थान में आदरणीय रफीक अहमद बेग साहिब सदर मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। तिलावत कुरआन से इज्तिमा का उद्घाटन समारोह शुरू हुआ। इस के बाद सदर मजलिस ने अहद ख़ुद्दाम और अतफाल दोहराया। इस के बाद सदर साहिब मजलिस अंसारुल्लाह भारत ने अहदे वफाए ख़िलाफत दोहराया। आदरणीय मुअतमिद (सचिव) साहिब मजलिस ख़ुद्दामु अहमदिया भारत ने इस मौका पर ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस साल मवाज़ना मजालिस में मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया कादियान अव्वल, मजलिस ख़ुद्दामु अहमदिया हैदराबाद दोयम, मजलिस ख़ुद्दामु अहमदिया माथोटम, केरल तीसरे स्थान पर आई ।

उद्घाटन समारोह में सदर मजलिस ख़ुद्दामु अहमदिया भारत ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ का ईमान वर्धक पैग़ाम पढ़कर सुनाया । इसी प्रकार सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ का ख़िताब जो आपने सालाना इज्तिमा मजलिस ख़ुद्दामु अहमदिया UK से फरमाया है, इसका खुलासा भी सदर मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया ने पेश किया। हुज़ूर अनवर का ईमान वर्धक संदेश भारत की 2 भाषाओं (इंग्लिश और हिंदी) में अनुवाद करवा कर ख़ुद्दाम एवं अत्फाल में बांटा गया। सदारती संबोधन के बाद दुआ उद्घाटन समारोह समाप्त हुआ।

उद्घाटन समारोह के बाद ज्ञान वर्धक मुकाबले शुरू हुए और ज़ोहर की अज़ान तक मुकाबले होते रहे। उस के बाद नमाज़े ज़ोहर और असर सभी मस्जिदों में जमा करके अदा की गई और सारे मेहमान खुद्दाम एवं अत्फाल ने में खाना खाया।

खेलों के मुकाबला का उद्घाटन समारोह

खेलों के मुकाबला का उद्घाटन दोपहर 4 बजे अहमदिया ग्राउंड में उद्घाटन परेड द्वारा किया गया। परेड के आरम्भ में हमारे देश भारत का परचम वातावरण में लहराया गया और राष्ट्रीय गान पेश किया गया। भारत की सारी मजलिसों से आने वाले ख़ुद्दास तथा अत्फाल ने इस समारोह में प्रतिनिधित्व किया। बाद ही विभिन्न व्यायाम प्रतियोगिताएं अहमदिया ग्राउंड में मग़रिब की अज़ान तक होती रही। 6: 30 बजे सभी मसजिदों में नमाज़ मग़रिब इशा अदा की गई और नमाज़ तथा खाने के बाद ठीक 7:30 बजे इज्तिमा गाह में ज्ञान वर्धक मुकाबले शुरू हुए जो रात 10 बजे तक जारी रहे।

दूसरा दिन

सालाना इज्तिमा मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत के दुसरे दिन की शुरुआत भी नमाज़े तहज्जुद के साथ हुई। जो मस्जिद अनवार में जमाअत के साथ अदा की गई। नमाज़ फजर के बाद दर्स हुआ।

शूरा का पहला इज्लास (सत्र)

दर्स के बाद मस्जिद अनवर में ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत की शूरा का पहला इज्लास हुआ। इस में सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह ताला की मंज़ूरी से परामर्श और वार्षिक बजट मजलिस ख़ुद्दामु अहमदिया भारत, रिसाला मिशक़ात और राहे इमान का सालाना बजट और ए.सी.सी एड के बजट पर विचार करने के लिए दो सब कमेटियां बनीं।

उद्घाटन समारोह मजलिस अत्फालुल अहमदिया भारत

सुबह 9:30 बजे जदीद इज्तिमा गाह में मजलिस अत्फालुल अहमदिया भारत के सालाना इज्तिमा का उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता माननीय सदर मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत ने की। तिलावत कुरआने करीम अहद और नज़म के बाद आदरणीय मोअतमिद साहिब अत्फालुल अहमदिया भारत ने वार्षिक रिपोर्ट पेश की। इस साल मजलिस अत्फालुल अहमदिया कादियान अव्वल हैदराबाद द्वितीय व भद्रवाह तीसरे स्थान पर पाई।

रात 9:30 बजे इज्तिमा गाह में विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रम आयोजित हुए और डोक्यूमेंटरी दिखाई गई। जिस में ख़ुद्दाम तथा अत्फाल बेहद शौक से शामिल हुए।

तीसरा दिन

सालाना इज्तिमा के तीसरे दिन 17 अक्टूबर को कार्यक्रमों का आरम्भ नमाज़ तहज्जुद से हुआ जो मस्जिद अनवार में अदा की गई। नमाज़ फजर और दर्स के बाद मसजिद अनवार में सामूहिक तिलावत कुरआन का आयोजन किया गया। इस के बाद अहमदिया ग्राउंड में ख़ुद्दाम तथा अत्फाल की खेलों की प्रतियोगिताओं का आरंभ हुआ। इजितमा के अंतिम दिन फ़ज्र की नमाज़ से लेकर अज़ान ज़ुहर तथा असर तक और उसके बाद मग़रिब की अज़ान तक अहमदिया ग्राऊंड में ख़ुद्दाम एवं अतफाल की विभिन्न प्रतियोगिताओं का सफल आयोजन हुआ। जिस में फुटबॉल, नेशनल कबड्डी, वालीबाल, रस्साकशी, लांग जम्प और दौड़ आदि के फाइनल मुकाबले कराए गए जिस में बहुत संख्या में प्रशंसकों ने भाग लिया और खिलाड़ियों को प्रोत्साहित किया।

समापन समारोह सालाना इज्तिमा मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया एवं अत्फालुल अहमदिया भारत

नमाज़ मग़रिब व इशा की अदायगी के बाद सालाना इज्तिमा का समापन समारोह नाज़िर आला साहिब और अमीर जमात अहमदिया कादियान की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। जिसमें आदरणीय सदर सदर अंजुमन अहमदिया कादियान, आदरणीय एडीशनल नाज़िर साहिब आला, आदरणीय सदर साहिब अंजुमन वक्फ जदीद और आदरणीय सदर साहब मजलिस अंसारुल्लाह भारत विशेष रूप से सम्मिलित हुए। समापन समारोह का आरम्भ पवित्र कुरआन की तिलावत से हुआ। समापन समारोह में सदर मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया ने सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ का वह संदेश जो सय्यदना हुज़ूर अनवर ने इज्तिमा के अवसर पर भारत के ख़ुद्दाम एवं अत्फाल के लिए भेजा है फिर पढ़कर सुनाया और इस संदर्भ में ख़ुद्दाम एवं अत्फाल को उन की ज़िम्मेदारियों की ओर ध्यान दिलाया। इस के बाद नाज़िर साहिब आला तथा अमीर जमाअत अहमदिया कादियान ने तकरीर की। आदरणीय नाज़िर साहब आला ने अपने संबोधन में सय्यदना हज़ूर अनवर के भिजवाए गए मुबारक संदेश की रोशनी में विभिन्न मुद्दों पर ध्यान दिलाया। समापन समारोह में सारा साल मज्लिस के कामों में प्रमुख स्थान प्राप्त करने वाली ख़ुद्दाम एवं अत्फाल की मजलिसों को सय्यदना हुज़ूर अनवर के मुबारक हस्ताक्षरों वाली सनदों से भी सम्मानित किया। इसी तरह मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत में अव्वल आने वाली मजलिस, मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया कादियान को अलम इनामी और सय्यदना हुज़ूर अनवर के मुबारक हस्ताक्षर वाली सनद से नवाज़ा गया।

शूरा का दूसरा इजलास:

सालाना इज्तिमा का समापन समारोह 9:45 बजे रात समाप्त हुआ इस के बाद 10:30 बजे मस्जिद अनवार में शूरा की दूसरी मीटिंग आयोजित हुई।

अल्लाह तआला के फज़ल से और हुज़ूर की दुआओं के तुफ़ैल इज्तिमा के तीनों दिन कार्यक्रम बड़े ही शांतिपूर्ण वातावरण में अपने अंत को पहुँचा। सालाना इज्तिमा के अवसर पर ख़ुद्दाम अत्फाल तथा व अंसार का हाज़री 2565 रही।

अल्लाह के फज़ल से इज्तिमा के सभी कार्यक्रम बहुत अच्छे रंग में आयोजित हुए। मौसम भी अल्लाह तआला की कृपा और हुज़ूर की दुआओं से सुखद रहा और माहौल भी शांतिपूर्ण रहा।अल्लाह तआला करे कि इस इज्तिमा को हर दृष्टि से सफल करे और और इस के परिणाम मजलिस के हक में बेहतर हों । आमीन

(शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad